आग

एथोपिया की लोककथा

यह एथोपिया की एक परंपरागत लोककथा है. एक गुलाम अपने मालिक की बरसों चाकरी करता है. अंत में गुलाम, मालिक से उसे मुक्त करने की अपील करता है. मालिक हँसते हुए राज़ी होता है - पर एक शर्त पर - गुलाम को बिना कपड़ों के एक रात ऊंची पहाड़ी के शिखर पर कड़कड़ाती सर्दी में बितानी होगी. हताश होकर गुलाम एक समझदार बूढ़े आदमी के पास जाता है. बूढ़ा उस गुलाम की मदद करता है.

एथोपिया की इस कहानी में दुनिया में सभी लोगों के लिए एक सन्देश छिपा है.

आग

एथोपिया की लोककथा

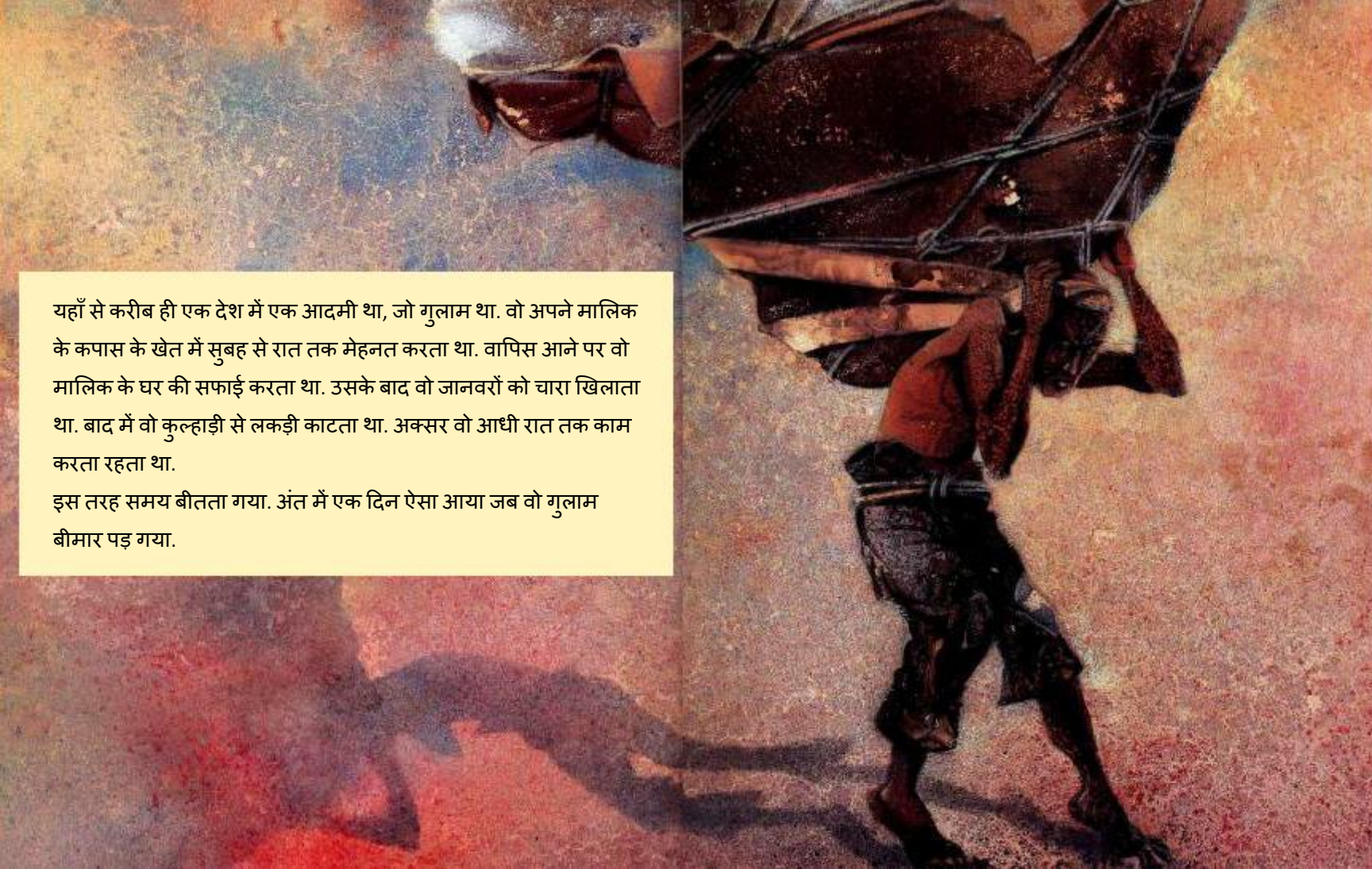

यहाँ से करीब ही एक देश में एक आदमी था, जो गुलाम था. वो अपने मालिक के कपास के खेत में सुबह से रात तक मेहनत करता था. वापिस आने पर वो मालिक के घर की सफाई करता था. उसके बाद वो जानवरों को चारा खिलाता था. बाद में वो कुल्हाड़ी से लकड़ी काटता था. अक्सर वो आधी रात तक काम करता रहता था.

इस तरह समय बीतता गया. अंत में एक दिन ऐसा आया जब वो गुलाम बीमार पड़ गया.

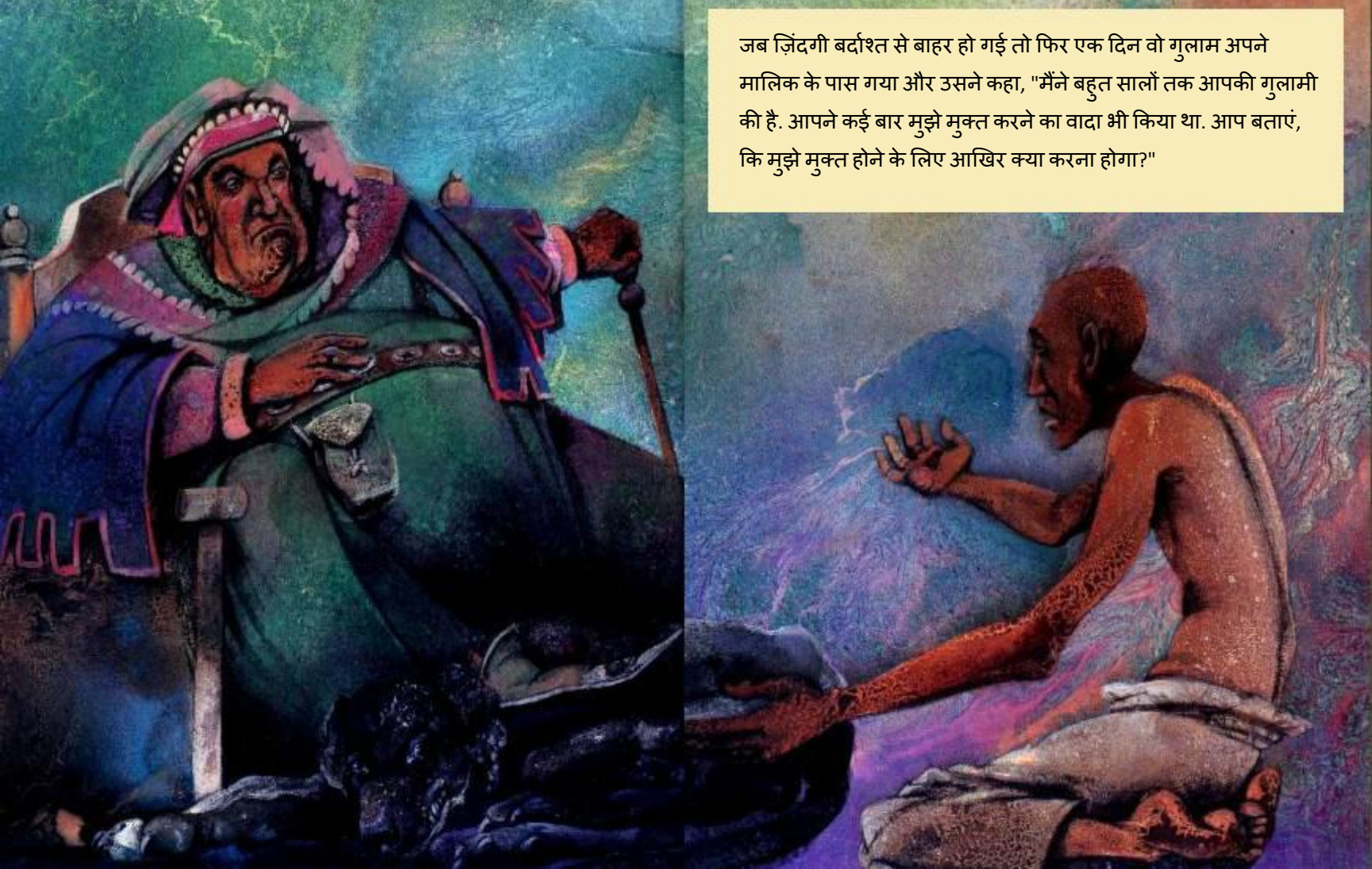

जब ज़िंदगी बर्दाश्त से बाहर हो गई तो फिर एक दिन वो गुलाम अपने मालिक के पास गया और उसने कहा, "मैंने बहुत सालों तक आपकी गुलामी की है. आपने कई बार मुझे मुक्त करने का वादा भी किया था. आप बताएं, कि मुझे मुक्त होने के लिए आखिर क्या करना होगा?"

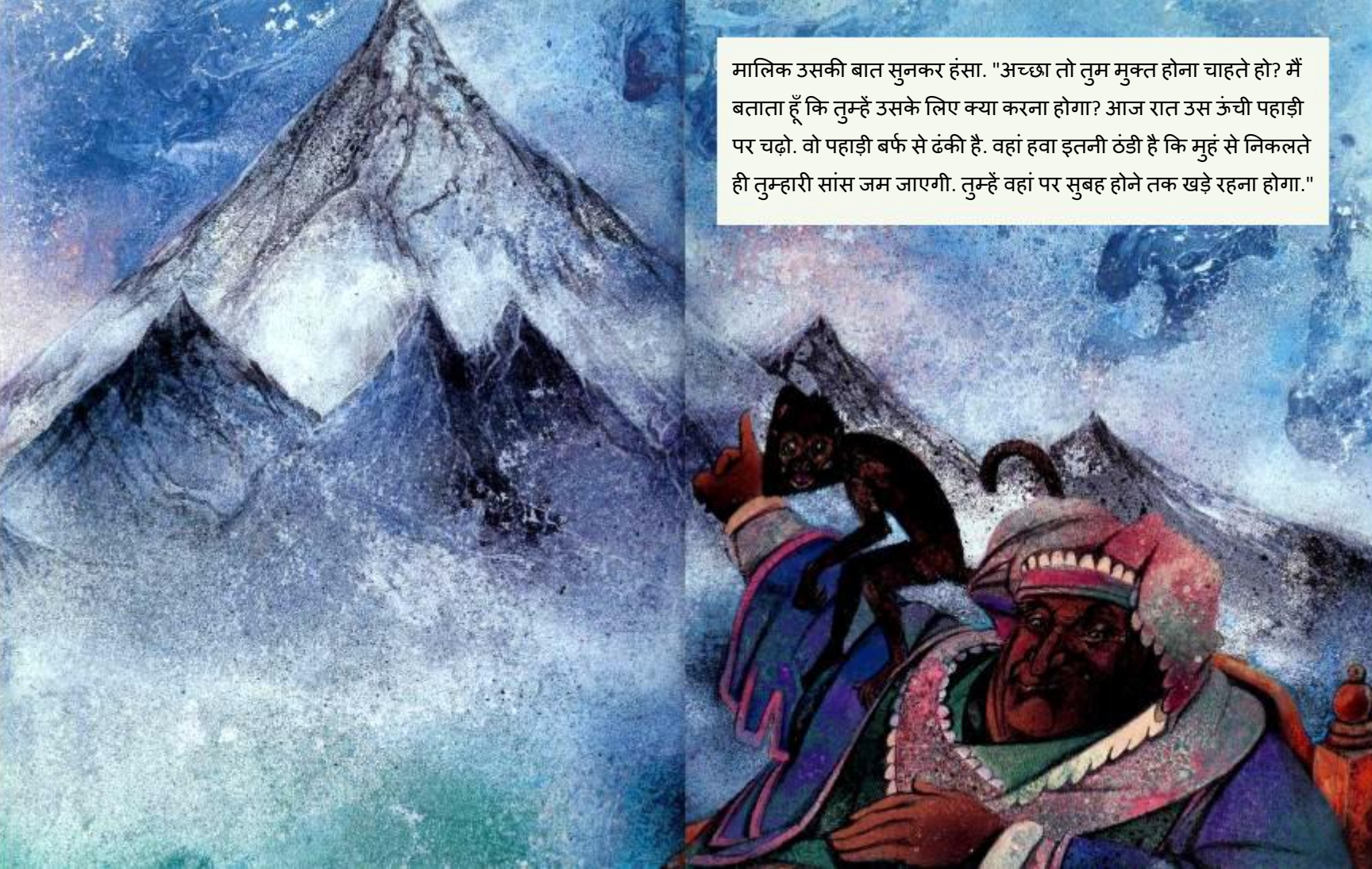

मालिक उसकी बात सुनकर हंसा. "अच्छा तो तुम मुक्त होना चाहते हो? मैं बताता हूँ कि तुम्हें उसके लिए क्या करना होगा? आज रात उस ऊंची पहाड़ी पर चढ़ो. वो पहाड़ी बर्फ से ढंकी है. वहां हवा इतनी ठंडी है कि मुहं से निकलते ही तुम्हारी सांस जम जाएगी. तुम्हें वहां पर सुबह होने तक खड़े रहना होगा."

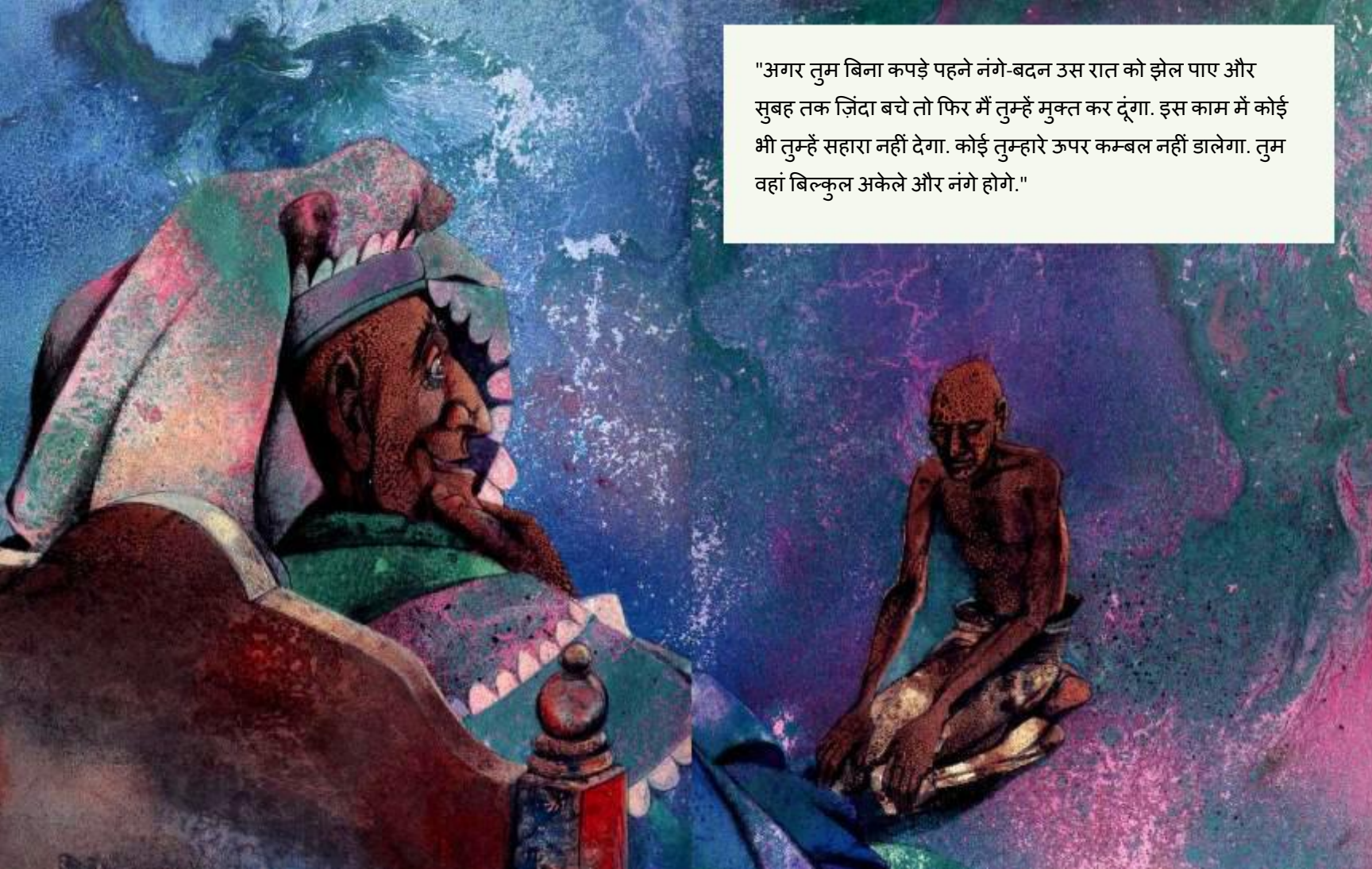

"अगर तुम बिना कपड़े पहने नंगे-बदन उस रात को झेल पाए और सुबह तक ज़िंदा बचे तो फिर मैं तुम्हें मुक्त कर दूंगा. इस काम में कोई भी तुम्हें सहारा नहीं देगा. कोई तुम्हारे ऊपर कम्बल नहीं डालेगा. तुम वहां बिल्कुल अकेले और नंगे होगे."

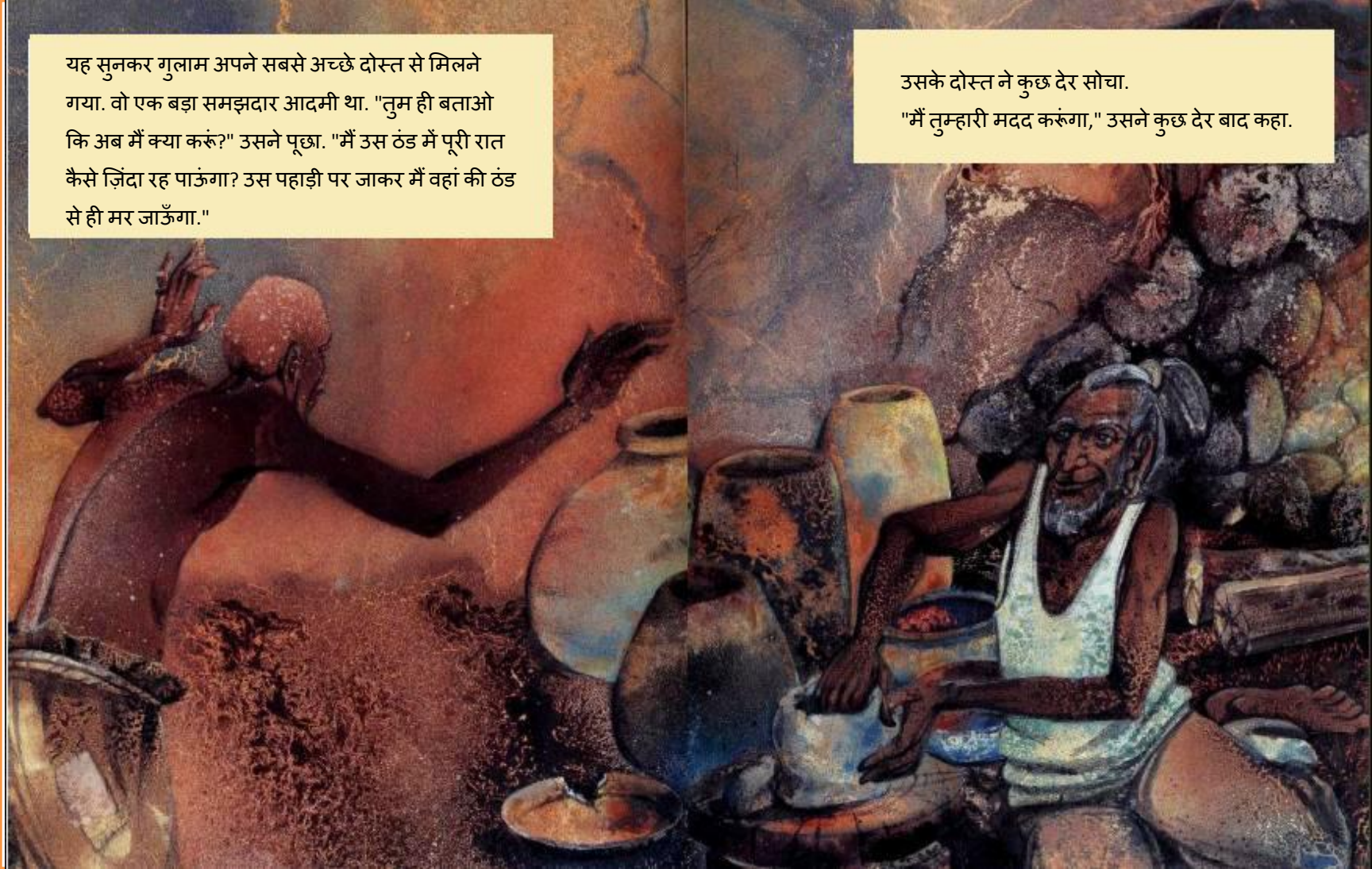

यह सुनकर गुलाम अपने सबसे अच्छे दोस्त से मिलने गया. वो एक बड़ा समझदार आदमी था. "तुम ही बताओ कि अब मैं क्या करूं?" उसने पूछा. "मैं उस ठंड में पूरी रात कैसे ज़िंदा रह पाऊंगा? उस पहाड़ी पर जाकर मैं वहां की ठंड से ही मर जाऊँगा."

उसके दोस्त ने कुछ देर सोचा.
"मैं तुम्हारी मदद करूंगा," उसने कुछ देर बाद कहा.

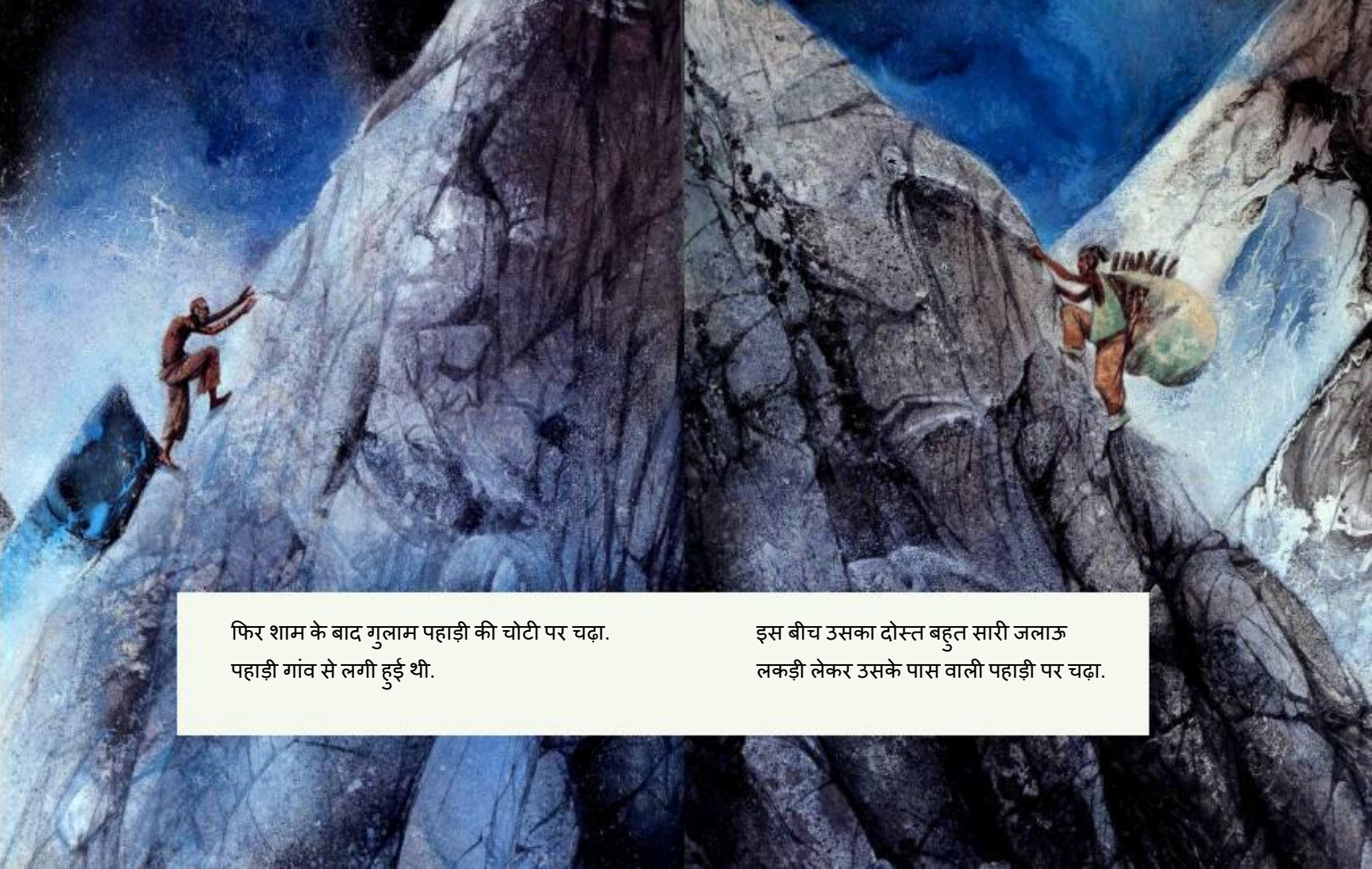

फिर शाम के बाद गुलाम पहाड़ी की चोटी पर चढ़ा.
पहाड़ी गांव से लगी हुई थी.

इस बीच उसका दोस्त बहुत सारी जलाऊ
लकड़ी लेकर उसके पास वाली पहाड़ी पर चढ़ा.

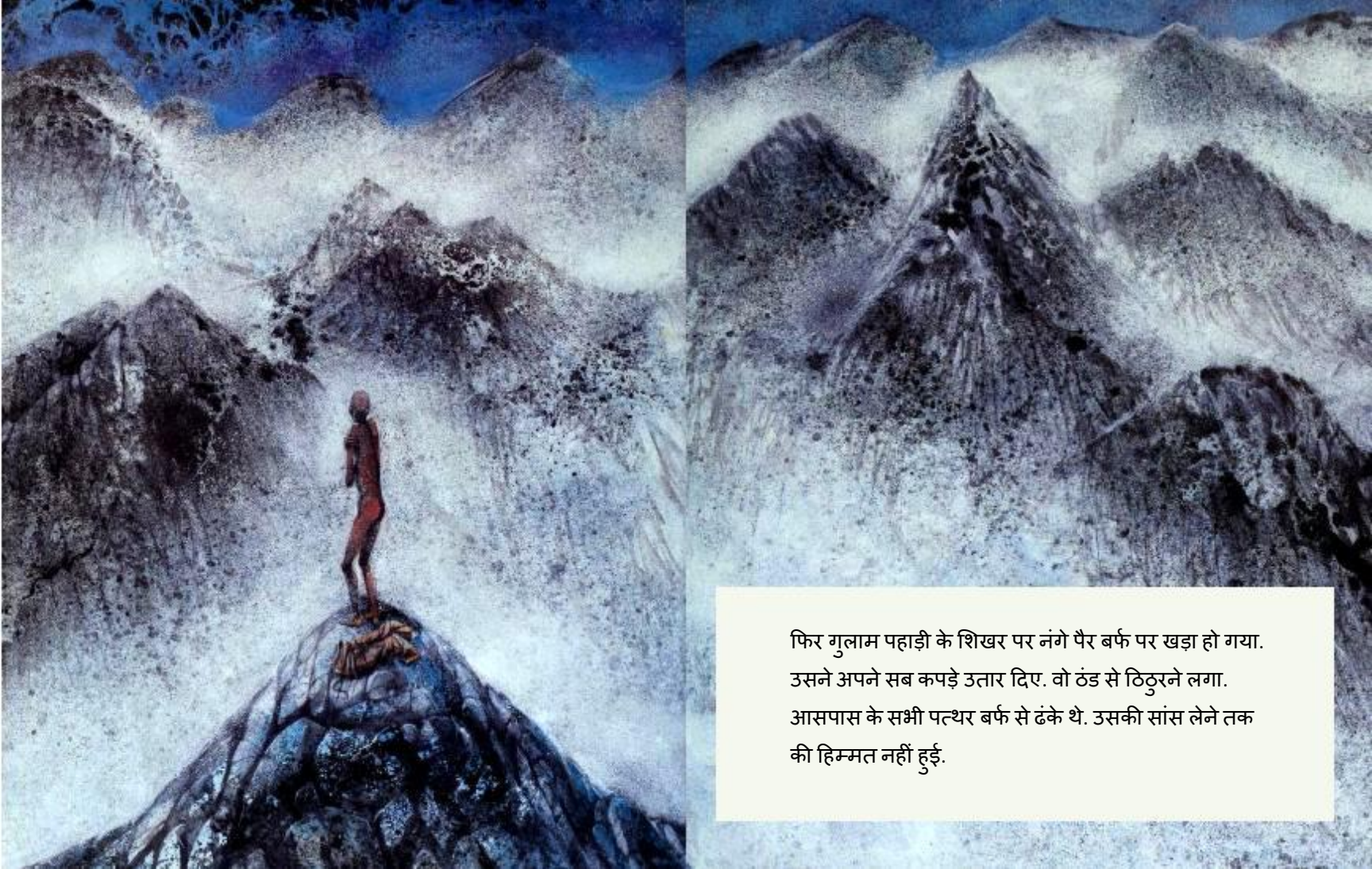

फिर गुलाम पहाड़ी के शिखर पर नंगे पैर बर्फ पर खड़ा हो गया. उसने अपने सब कपड़े उतार दिए. वो ठंड से ठिठुरने लगा. आसपास के सभी पत्थर बर्फ से ढंके थे. उसकी सांस लेने तक की हिम्मत नहीं हुई.

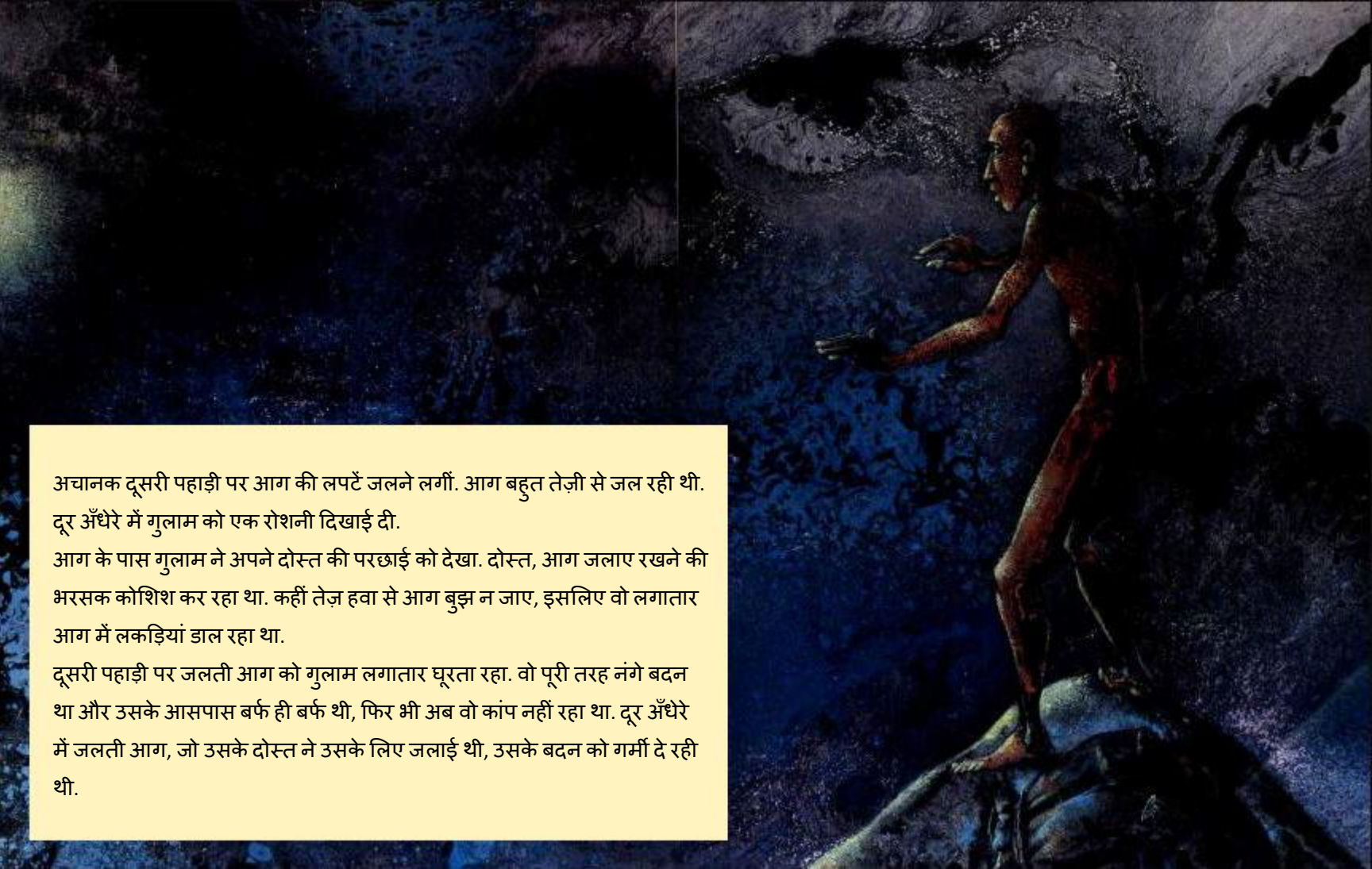

अचानक दूसरी पहाड़ी पर आग की लपटें जलने लगीं. आग बहुत तेज़ी से जल रही थी. दूर अँधेरे में गुलाम को एक रोशनी दिखाई दी.

आग के पास गुलाम ने अपने दोस्त की परछाई को देखा. दोस्त, आग जलाए रखने की भरसक कोशिश कर रहा था. कहीं तेज़ हवा से आग बुझ न जाए, इसलिए वो लगातार आग में लकड़ियां डाल रहा था.

दूसरी पहाड़ी पर जलती आग को गुलाम लगातार घूरता रहा. वो पूरी तरह नंगे बदन था और उसके आसपास बर्फ ही बर्फ थी, फिर भी अब वो कांप नहीं रहा था. दूर अँधेरे में जलती आग, जो उसके दोस्त ने उसके लिए जलाई थी, उसके बदन को गर्मी दे रही थी.

पूरी रात वो जलती आग को देखता रहा और उसकी गर्मी को महसूस करता रहा. उससे ठंड और बर्फ से उसे कोई नुकसान नहीं हुआ.

अगले दिन सुबह होते ही गुलाम पहाड़ी से उतरकर अपने मालिक के पास वापिस गया. मालिक बहुत आग-बबूला हुआ. वो अपने गुलाम को मुक्त नहीं करना चाहता था, पर अब उसके पास और कोई चारा नहीं बचा था.
"जाओ," उसने गुलाम से कहा.

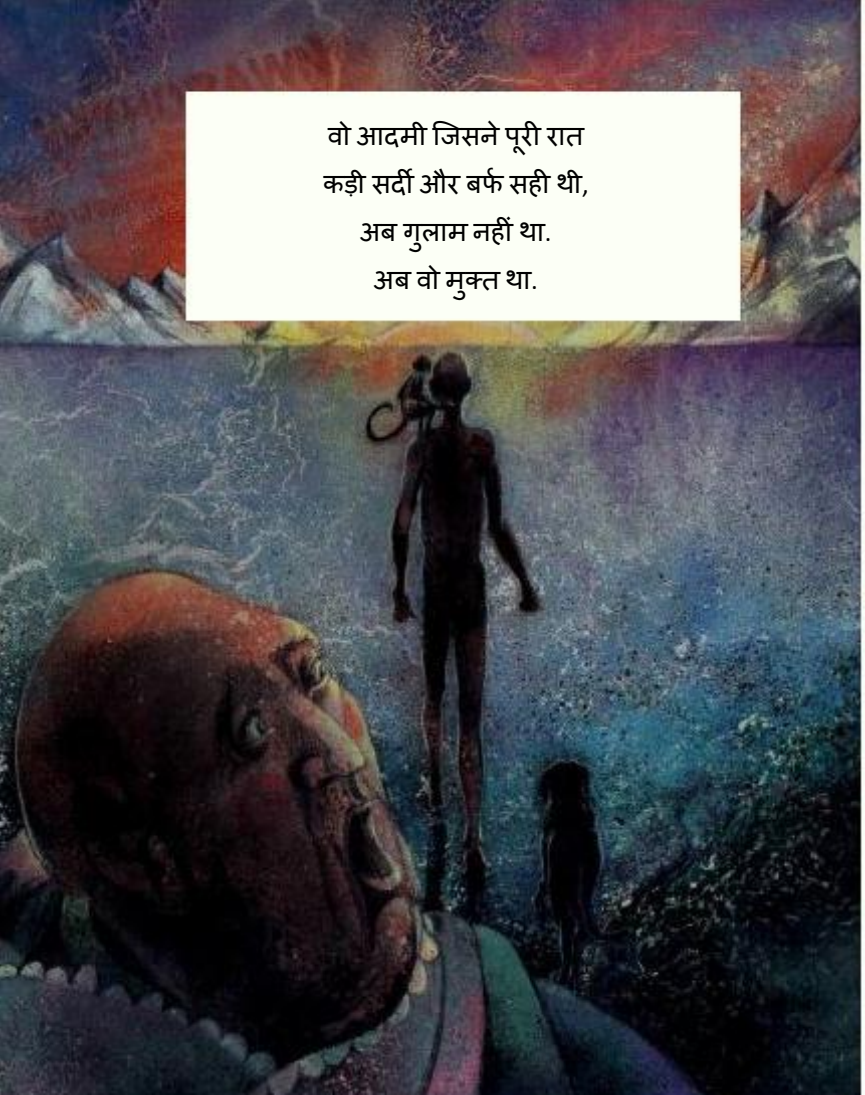

समाप्त